अध्याय 20

लेखन के विविध आयाम

रिपोर्ताज

'रिपोर्ताज' फ्रेंच भाषा के शब्द ह। एकरा मूल में अंगरेजी के 'रिपोर्ट' शब्द बा। पत्रकारिता के 'रिपोर्टिंग' शब्द से एकर गहिर सम्बन्ध बा। विद्वान लोग रिपोर्ताज के रिपोर्ट के कलात्मक रूप कहेला, साहित्यिक प्रस्तुति बतावेला। एह साहित्यिक गद्य विधा के जनमो दूसरका विश्वयुद्ध के समय भइल बतावल जाला।

रिपोर्ताज के अन्तर्वस्तु, भाषा, शैली आ प्रतिपाद्य के अध्ययन के आधार पर कहल जा सकेला कि समसामयिक घटना-दुर्घटना, जइसे युद्ध, भूकम्प, अकाल, बाढ़, महामारी वगैरह का मानवीय पहलुअन के तथ्यपरक साहित्यिक शैली में अभिव्यक्त समाचार अथवा रिपोर्टिंग के रिपोर्ताज कहल जाला। एकर लेखक पत्रकारिता से जुड़ल केहू साहित्यकार चाहे साहित्यिक प्रतिभा के धनी केहू पत्रकार हो सकेलन।

भोजपुरी साहित्य में रिपोर्ताज हिन्दी के प्रभाव से आइल बा। बाकिर भोजपुरी में एकर लेंखन शैली ओह तरह से नइखे उतर सकल जइसन विदेशी साहित्य में बा। परमेश्वर दूबे शाहाबादी के भोजपुरी रिपोर्ताज

संग्रह 'एनक' भोजपुरी के पहिला रिपोर्ताज संग्रह ह। जवना में बाबा बरमेसर नाथ की जै, गंगा माई के भरली अररिया, सोन वा चमचम चमके ना, जय दुर्गा महारानी की वगैरह एगारह रिपोर्ताज संकलित बा। 'ऐनक' के भूमिका में रसिक बिहारी ओझा 'निर्भीक' के बेयान बा कि एकर नाँव ऐनक एह से रखाइल बा कि जवना घटना अवसर आ जगह के बरनन एह में बा, ओकर सही सहज चित्र में एह में साफ लउकत, झलकत बा।' एह संग्रह के अनेक रचना के संस्मरणात्मक शैली देख के ई कहल कठिन हो जाता कि ई संस्मरण ह कि रिपोर्ताज। शाहाबादी जी के अलावे डॉ॰ रसिक बिहारी ओझा 'निर्भीक' भोजपुरी में डॉ. विवेकी राय के लिखल रिपोर्ताज आ फीचर मानक मानल जाला।

बोध प्रश्न

1. 'रिपोर्ताज' कवना भाषा के शब्द ह।
2. रिपोर्ताज के बारे में बताईं।
3. भोजपुरी में रिपोर्ताज लेखन के बारे मे बताईं।

फीचर

फीचर पत्रकारिता के अंग ह। ओकर एगो प्रकार ह। फीचर बहुत हद तक रिपोर्ताज जइसन होला। बाकिर, दूनों में फरक ई होला कि रिपोर्ताज में जहँवा कवनो समसामयिक समाचार के अलम लेहल जरूरी होला, उहँवे फीचर लेखन खातिर ई जरूरी ना होखे। दोसरे रिपोर्ताज में कवनो ताजा आ खास घटना-दुर्घटना के मानवीय संवेदना से जोड़ के तुरत लिखे छपवावे होला, ताकि ऊ बासी ना हो जाय। ओकरा पास सामग्री जुटावे खातिर पौराणिक, ऐतिहासिक वगैरह किताब आ दस्तावेज के हीरे-मथे भा घोंके-बाँचे के समय ना होला, जबकि फीचर के लेखक कवनो विशेष विषय के सीधा सही जानकारी के साथ-साथ पौराणिक ऐतिहासिक सामग्रियन के सहारा ले सकेला।

'फीचर' अंगरेजी के शब्द ह। हिन्दी में एकरा खातिर 'रूपक' शब्द चलेला। पत्रकारिता के क्षेत्र में फीचर अथवा रूपक ओह निबन्धात्मक शैली में लिखल रचना के कहल जाला, जवना में लेखक कवनो समयानुकूल महत्वपूर्ण विषय पर मर्यादित आकार में प्रभावी भाषा प्रदान करत विनोदपूर्ण ढंग से आपन विचार प्रस्तुत करेला। प्रभावी फीचर लेखक उहे व्यक्ति हो सकेला, जेकर तेज-तरख नजर रोज-रोज के घटत महत्वपूर्ण घटना पर होखे। फीचर ताजा समचार के अलावे पौराणिक ऐतिहासिक घटना, तिथि, परम्परा, जरूरत वगैरह कवनो विषय पर लिखा सकत बा।

फीचर लेखन के कई गो प्रकार होला, जइसे- वर्णनात्मक, व्यंग्यात्मक, व्याख्यात्मक, चित्रात्मक वगैरह। ई सब निबन्धो के प्रकार हवे स। बाकिर, समय के अनुकूलता आ समसामयिकता के स्तर पर फीचर आ निबन्ध में फरक होला। गाँधी जी का सिद्धान्त पर लिखाईल लेख निबन्ध कहाई त 'आज के परिवेशमें गाँधी का सिद्धांत के भूमिका' विषय पर लिखाइल रचना फीचर के कोटि में आई। के.पी. नारायण के अनुसार- तथ्य आ आँकड़ा के लेके लेख लिखल सहज होला। बाकिर फीचर चाहे रूपक लेखन ओकरा अपेक्षा अधिक कलात्मक होला। एकरा खातिर अनुभूति, भावना, कल्पना आउर अवलोकन सब के जरूरत होला। एके विषय-वस्तु पर निबन्ध आ फीचर लिखा सकता। बाकिर, दूनों के शैली आ प्रतिपादन भिन्न हो जाई निबन्ध में सामान्य तौर पर कवनो खास विषय, समस्या चाहे ओकरा कवनो खास पहलू के महीन आ गहीन अध्ययन पावल जाला त फीचर खातिर ओतना गहराई में ना जाके शब्दने के सहारे अपेक्षित प्रभाव पैदा कइल जाला।'' साहित्यिक पत्रकारिता के बाद दूरदर्शन, सिनेमा, आ प्रेस-मीडिया में आपन जगह बनावे के क्रम में भोजपुरी में फीचर लेखन के परम्परा शुरू हो गइल बा।

बोध प्रश्न

1. **फीचर के का अर्थ होला।**
2. **फीचर कवना भाषा के शब्द ह।**
3. **फीचर लेखन के बारे में बताईं।**

विज्ञापन

विज्ञापन के अर्थ होला-परचा, परिपत्र, पोस्टर, पत्र-पत्रिका चाहे इलेक्ट्रानिक मिडिया, सिनेमा, दूरदर्शन, कम्प्यूटर इन्टरनेट वगैरह द्वारा कवनो विषयवस्तु आ उत्पादन वगैरह के वास्तविक काल्पनिक चाहे आरोपित गुण सब के प्रचार।

आज सउँसे दुनिया विज्ञापन युग में जी रहल बा। एकरा अलावे बस गाड़ी पर, बस-गाड़ी में, बस स्टैंड पर, रेलवे पलेटफार्म पर, सड़क देवालपर चाहे जहाँ कवनो जगह बाँचल बा उहवाँ होर्डिंग, पोस्टर स्टिकर वॉलिग (देवाल पर लिखल के) वगैरह से विज्ञापन के रूप में कवनो चीज के झूठ साँच प्रचार कइल जा रहल बा। मतलब जेने नजर डाली- ओनही विज्ञापने विज्ञापन नजर आवत बा। विज्ञापन शब्द भलही आधुनिक युग के देन होखे बाकिर विज्ञापन चाहे कवनो विषय वस्तु के प्रचार के काम त प्राचीने काल में होत रहल बा। पहिले डुगडुगी बजाके, गाँव के फेरी लगा के, हरकारा के जरिये कवनो चीज के प्रचार कइल जात रहे। बाकिर जइसे जइसे मशीनी जुग आवत गइल- छापाखाना के बाद बेतार के तार रेडियो, टेलीफोन, लाउडसपीकर, टी.वी. विडियो कंप्यूटर आदि के विकास के संगे-संगे विज्ञापन के रूप प्रकार आ आकार बढ़ते गइल। आज के विज्ञापन आ ओकरा ढंग के देख के कहल जा सकेला कि विज्ञापन के एगो उपकरण ह। जनसंचार के माध्यम सब में कवनो विषयवस्तु भा उपकरण उत्पादन वगैरह के प्रचार जवना जरिये कइल जाला, ओकरे के विज्ञापन कहल जाला। प्रचार करे खातिर कुछ सूचना दिहल जरूरी होला। सूचना

देवे के त समाचार कहल जाला। बाकिर समाचार आ विज्ञापन में फरक होला। समाचार से जवन जानकारी चाहे ज्ञानवृद्धि होला ओकर लाभ पाठक भा श्रोता भा दर्शक के होला जबकि विज्ञापन से प्राप्त समाचार पत्र-पत्रिका वगैरह में जवन विज्ञापन छपेला ओकरा के सजावटी (प्रदर्शनात्मक) विज्ञापन कहल जा सकेला। प्रकाशन खातिर कालम आ विज्ञापन के जरिये घेरल जगह का लम्बाई चौड़ाई (क्षेत्रफल) के आधार पर पइसा लिहल जाला। एकर आकार प्रायः बड़ होला। एह सब से एह विज्ञापन में चित्र, मोट टाइप आ प्रिटिंग ब्लॉक बगैरह के प्रयोग हो सकेला। एह तरह के विज्ञापन के सामग्री सरकारी, गैरसरकारी, प्रशासनिक, व्यापारिक, संस्थागत प्रचार चाहे कवनो कम्पनी का उत्पाद के महिमा बखान कर के विक्री बढ़ावे खातिर होला। छोट-छोट अक्षर वाला छोट-छोट विज्ञापन वर्गीकृत (क्लासीफाइड) विज्ञापन कहल जाला। बिआह नोकरी गुमसुदगी, किराया के मकान, कीना-बेची वगैरह से जुड़ल एह तरह के विज्ञापन प्रतिशब्द का दर से समाचार पत्र पत्रिकन में छपेला। आकार के दृष्टि से विज्ञापन एक कालमी, दू कॉलमी, तीन कालमी, चौथाइ पन्ना के, आधा पन्ना के, पूरा पन्ना के, एक से अधिक पन्ना के हो सकेला आ ओह सब के आकार के हिसाब विज्ञापन दर तय होला।

उदाहरण- हेनहूँ झाँकीं। कायम चूर्ण खाईं गैस भगाईं।

श्रव्य माध्यम के विज्ञापन

श्रव्य माध्यम के विज्ञापन खातिर रेडियो प्रमुख साधन बा। एकरा जरिये सरकारी व्यापारी चाहे रोजगारी विज्ञापन के प्रसारण होला। रेडियो पर

कवनो कार्यक्रम- समाचार चाहे दोसर कवनो कार्यक्रम के प्रसारण का पहिले, बीच में आ अंत में गीतात्मक, संगीतात्मक स्लोगन आधारित विज्ञापन चाहे संदेश दिहल जाला।

दृश्य श्रव्य माध्यम के विज्ञापन

दृश्य श्रव्य माध्यम मतलब दूरदर्शन, सिनेमा, वीडियो, केबल टीवी वगैरह के दायरा आउर सब माध्यमन के व्यापक भइला से सूचना विज्ञापनदाता के आ माध्यम के लाभ पहुँचावेला। संचार माध्यम के विज्ञापन से आर्थिक आय होला आ विज्ञापन देवे वाला के अपना उत्पाद के बिक्री बढ़ावे में मदद मिलेला। इ स्थिति रोजगार, किराया विवाह वगैरह के विज्ञापन सब के संदर्भ में भी सही बा काहें कि विज्ञापन देवेवालन के सम्पर्क एगो बड़ वर्ग से बढ़ेला जवना से उन्हन के सुपात्रन के चुनाव में आसानी होला।

ऊपर के व्याख्या के आधार पर कहल जा सकेला कि विज्ञापन जनसंचार के कई एक माध्यम से प्रचार करे के एगो उपादान ह जवना में खास तरह के सूचना होले। एह सूचनन के प्रकाशित-प्रसारित करे खातिर कुछ ना कुछ धन लिहल जाला। ई धन शब्द संख्या स्थान चाहे समय के आधार पर वसूल कइल जाला।

विज्ञापन के वर्गीकरण

जनसंचार के माध्यम के आधार पर विज्ञापन के तीन वर्ग में बाँटल जा सकेला-दृश्य माध्यम सब के (विज्ञापन लिखल आ छपल) श्रव्यमाध्यम के विज्ञापन (टीवी, सिनेमा, कंप्यूटर वगैरह) दृश्य माध्यम सब के विज्ञापन

में लिखित मतलब हाथ के लिखल जइसे-देवाल पर लिखल, बोर्ड पर लिखल , बस-गाड़ी बिजली के खंभा वगैरह पर गेडू चूना चाहे पेंट वगैरह से लिखल विज्ञापन आ छपल (मुद्रित) जइसे पम्पलेट पोस्टर समाचार पत्र, पत्रिका वगैरह के विज्ञापन आवेला। एह विज्ञापन लिखे का ढँग के अलावा भाषा, रंग आ चित्र के चमत्कार शामिल होला जवना से विज्ञापन पढ़ेवाला के भीतर विज्ञापन के विषय-वस्तु या उत्पाद प्राप्त करे के इच्छा प्रबल हो जाय।

एह सब पर विज्ञापन प्रसारित करे के दर आउर माध्यमन से बहुत अधिक होला। एह सब माध्यम से प्रसारित विज्ञापन के अउर श्रोता-दर्शक-उपभोक्ता पर अधिक असर होला।

बोध प्रश्न

1. विज्ञापन के अर्थ बताईं।
2. विज्ञापन के परिभाषा लिखीं।
3. विज्ञापन के प्रकार बताईं।
4. वर्तमान युग विज्ञापन युग ह। एह कथन के साबित करीं।

अनुवाद

कवनो भाषा में व्यक्त भाव चाहे विचार चाहे तथ्य जब लक्ष्य भाषा में व्यक्त होले मतलब प्रकट होले त ओकरा के अनुवाद कहल जाला। विद्वान लोग अनुवाद प्रक्रिया के सातगो चरण बतवले बा-पाठ-चयन, पाठ-पठन, पाठ-विश्लेषण, भाषांतरण, पुनः निरीक्षण, मिलान आ संशोधित-भाषांतरण। मतलब अनुवाद करे खातिर सबसे पहिले पाठ्य-सामग्री के चुनाव करके ओकरा ढंग से पढ़ आ खूब विश्लेषण कइला के बाद, भाषांतरण करे के होला। भाषांतरण के बाद भाषांतरित सामग्री के भाव, अर्थ, आशय, शिल्प आ आउर सब प्रकार का संदर्भन के समतुल्यता के निरीक्षण के बाद मूल पाठ से मिलान कर के जरूरत के मुताबिक भाषांतरण के संशोधित करत अनुवाद के काम पूरा कइल जाला।

अनुवाद के प्रकार

अइसे त पाठ्य-विस्तार, भाषा-स्तर, अनुवाद के प्रकृति, विषय वगैरह के आधार पर अनुवाद के कइगो भेद बतावल बा, जवना में मुख्य भेद बा-शब्दानुवाद, भावानुवाद, छायानुवाद, सारानुवाद, व्याख्यानुवाद, वार्तानुवाद (आशुअनुवाद) आ रूपांतरण। कवनो अच्छा अनुवाद के गुण

होला–ओकर सहजता, निकटता, समग्रतुल्यता, मूल्यनिष्ठता, समूलता, सरलता, बोधगम्यता आ स्पष्टता। जवना भाषा में अनुवाद हो रहल बा, ओकर प्रकृति का मुताबिक शब्द आ वाक्य के चुने–लिखे के चाहीं। मूल भाषा का शब्दन के समानार्थक शब्द के हूबहू प्रयोग कइल जाय त शब्दानुवाद कहल जाई। जब मूल भाव के अनुवाद का भाषा में स्वतंत्र रूप में राखल जाय त ई भावानुवाद कहाई। जब लेख के सारांश के अनुवाद होई त ई सारानुवाद कहाई। जब मूल भाव के दोसरा भाषा में अपना ढंग से विस्तार से समुझा के लिखल जाय त एकरा के व्याख्यानुवाद भा टीका कहाई। पद्य के अनुवाद गद्यो में हो सकेला। एकरा के गद्यानुवाद चाहे भावानुवाद कहल जाई। जब एक विधा के रचना के अनुवाद दोसरा विधा में कइल जाय त ई रूपान्तर होई जइसे प्रेमचन्द के कहानी 'पंच परमेश्वर' के नाट्य रूपान्तर 'पंच परमेसर' बा।

रेडियो वार्त्ता

'वार्त्ता' शब्द के अर्थ होला–बातचीत आ वृतांत। अंगरेजी में एकरा खातिर 'स्पोकेन वर्ड' चलेला। बाकिर आमतौर से वार्त्ता आ रेडियो वार्त्ता में फरक होला। रोजमर्रा के व्यवहार में होखे वाली वार्त्ता में दू चाहे दू से अधिक आदमी आपस में खाली बातचीत करेलन ज़बकि रेडियो वार्त्ता के एगो खास अर्थ होला। जब वक्ता रेडियो पर मानव समूह से अप्रत्यक्ष रूप से कवनो खास विषय पर बातचीत करेला त ओकरा के 'इलेक्ट्रॉनिक मीडिया' में 'रेडियो वार्त्ता' कहल जाला। अंगरेजी में एकरा के 'रेडियो टॉक' आ वार्त्ताकार के 'रेडियो टॉकर' कहल जाला।

रेडियो वार्त्ता एगो खास वार्त्ताकार के जरिये प्रसारित कइल जाला। एकरा में श्रोता पक्ष का संवादी प्रवृत्ति के जिम्मेदारी वार्त्ताकारे के होला। मतलब अपना वार्त्ता में वार्त्ताकार ई समझ लेवे कि श्रोता ओकरा वार्त्ता के संगे आपन दिमाग जोड़ चुकल बा आ ओकरा अभिव्यक्तियन के साथे श्रोता सब के भाव–बोध जुड़ल होला। रेडियो वार्त्ता खातिर लिखल आलेख मुद्रण खातिर ना प्रसारण खातिर होला। एह से एकरा में श्रव्य रचना के सब गुण भइल जरूरी होला। वार्त्ता प्रसारित करे के समय वार्त्ताकार के सामने ओकर आलेख जरूर रहे के चाहीं। आलेख ना रहला पर वार्त्ताकार कुछ के कुछ बोल सकेलन। जवना से उनका साथे–साथे रेडियो कार्यक्रम भी दोषपूर्ण हो सकेला।

उत्तम रेडियो वार्त्ता खातिर वार्त्ता के विषय के चुनाव जरूरी होला। ओह विषय से जुड़ल हर तरह के जानकारी वार्त्ताकार रहे के चाहीं। एकरा संगही वार्त्ताकार के एह बात के ध्यान राखे के चाहीं कि एह वार्त्ता के सुननिहार के लोग बा। ताकि रेडियो नीति के ध्यान में राखत उ वार्त्ता के रोचक आ प्रभावी आलेख तइयार कर सकस। वार्त्ता के भाषा सहज, सरल आ स्वाभाविक सम्भाषण के भाषा होले। एकरा खातिर अइसन जीवंत शैली के अपेक्षा होले जवना के शब्द बोलत होखे, चित्र निर्माण करत होखे आ जवन श्रोता सब के अपना सुंदरता के प्रति खिंचाव पैदा ना क के अपना भीतर उफनत भाव विचार के प्रति खिंचाव पैदा करे। जवना वाक्यन में गति, प्रवाह, लयात्मकता आ जीवंतता होखे। रेडियो वार्त्ता चूकि एगो तय समय सीमा के भीतर प्रस्तुत होले। एह से वार्त्ताकार का वार्त्ता के आलेख ओही हिसाब से तइयार कर के प्रस्तुत करे के अभ्यास कर लेवे के चाहीं। उदाहरण खातिर आकाशवाणी पटना के भोजपुरी कार्यक्रम आरती से प्रसारित रेडियो वार्त्ता सुनल जा सकेला।

बोध प्रश्न

1. वार्त्ता के शाब्दिक अर्थ का होला।
2. आम-वार्त्ता आ रेडियो-वार्त्ता के फरक बताईं।
3. रेडियो-वार्त्ता के विशेषता बताईं।

समाचार लेखन

कवनो नया घटल घटना के आकर्षक ढंग से प्रकाशित चाहे प्रसारित करे के कला समाचार लेखन कला के अन्तर्गत आवेला। समाचार तइयार करेवाला का एह बात के ज्ञान होखे के चाहीं कि ई समाचार काहे खातिर आ केकरा खातिर तइयार हो रहल बा। समाचार में कवनो घटल नया घटना-दुरघटना के सिलसिलेवार ढंग से आकर्षक भाषा में उजागर कइल जाला ताकि प्रकाशित चाहे प्रसारित समाचार कि ओर पाठक, श्रोता चाहे दर्शक सहजे आकर्षित हो जास। विभिन्न स्रोतन से मिलल जानकारी के समाचार के रूप में ढालल समाचारलेखन कला के मूल लक्ष्य होला। जन समाचार पत्र खातिर निर्धारित नियम, पाठक-श्रोता के जरूरत आ समाज सहित देश दुनिया पर सकारात्मक प्रभाव डाले का खेयाल से तइयार कइल जाला। कवनो समाचार के मुख्य रूप से तीन गो भाग होला-शीर्षक, आमुख आ मूल कलेवर। शीर्षक मुद्दा के पाठक भा श्रोता के सोझा राखेला, ओकरा मुख्य मुद्दा के पाठक भा श्रोता के सोझा राखेला। समाचार के शीर्षक देत समय ध्यान राखे के चाहीं कि शीर्षक अइसन होखे जवना के देखते पाठक अथवा श्रोता में समाचार पढ़े आ सुने-देखे खातिर उत्सुकता बढ़ जाय। हर समाचार का प्रारंभ के तीन-चार पंक्ति समाचार के सारांश बतावेला। जवना में समाचार के मुख्य विषय-वस्तु-घटना आ प्रसंग के आकर्षक आ उत्सुकता

जगावेवाला उल्लेख होला। एकरे के समाचार के आमुख कहल जाला। मुख्य कलेवर समाचार के ऊ भाग होला जवन आमुख के बाद बिस्तार में लिखल भा बतावल जाला। एकरा में ऊ सब सूचना होला, जवना के समाचार पाठक आ सुननिहार लोग तकले पहुँचावे के होला।

समाचार लिखे का पहिले नीचे लिखल बातन में ध्यान दिहल समाचार लेखन कला के जरूरी शर्त्त बा-

(i) समाचार लेखन प्रारंभ करे से पहिले अपना तथ्यन के ठीक-ठीक जाँच कर लेवे के चाही आ जवना एजेन्सी से सूचना मिले, ओकर हवाला समाचार में देवे के चाहीं।

(ii) समाचार लिखे का पहिले महत्त्वहीन तथ्य आ सूचना के अलग कर देवे के चाहीं।

(iii) महत्त्वपूर्ण तथ्यन में तारतम्यता बइठा के साफ-साफ समाचार प्रस्तुत करे के चाहीं।

(iv) सउँसे समाचार के केन्द्रीय मुद्दा चाहे महत्वपूर्ण बात के चुन के आमुख के रूपमें लिखत, ओही से शीर्षक बनावे के चाहीं।

(v) समाचार के भाषा सुन्दर, आकर्षक आ सभका समझ में आ जाय वाला होखे के चाहीं।

(vi) समाचार के निष्पक्ष आ सकारात्मक प्रभाव वाला होखे के चहीं।

क्षेत्रीय, प्रांतीय, राष्ट्रीय आ अन्तरराष्ट्रीय स्तर के समाचार के

कईगो प्रकार पावल जाला-सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक, आर्थिक, शैक्षिक, व्यावसायिक, खेल-मनोरंजन से सम्बन्धित, आध्यात्मिक, वैज्ञानिक वगैरह। एह सभ के कई एक उपप्रकार पावल जाला।

बोध प्रश्न

1. समांचार के परिभाषा दीं।
2. समाचार के कय गो भाग होला।
3. समाचार लेखन में कवना-कवना बात के ध्यान राखे के चाहीं।

पटकथा

पटकथा के मतलब होला–दृश्यक्रम के निर्धारण। एकरा के अंग्रेजी में **'स्क्रीन प्ले'** चाहे, सिनेरियो भी कहल जाला। एकर संबंध श्रव्य-दृश्य माध्यम दूरदर्शन चाहे सिनेमा से बा। कवनो कथा के घटना प्रसंग के रूप में क्रमवार जब दूरदर्शन चाहे सिनेमा के पट (स्क्रीन चाहे परदा) पर उतारल जाला त ओकरे के पटकथा कहल जाला। मनोहर श्याम जोशी अपना किताब "पटकथा लेखन : एक परिचय" में लिखले बाड़न कि "पटकथा कुछ आउर ना कैमरा से फिल्मा के परदा पर देखावे खातिर लिखाइल कथा ह।" अगर कहल जाय कि कथानक के अलग-अलग दृश्यन में तुड़ के प्रस्तुत कइल पटकथा ह त बेजाँय ना कहाई। पटकथा लेखन इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के एगो अइसन विधा ह जवना में कहानियन के दृश्यन में बाँटे के होला। एकरा में दृश्यन के सिलसिला ओही तरह के होला जइसे उपन्यास में परिच्छेदन के होला। एह विधा में जब घटना स्थल बदलेला उहवें दृश्यो बदल जाला।

पटकथा लेखन खातिर दृश्य ज्ञान भइल जरूरी होला। एकरा खातिर लेखक का फिल्म के लम्बाई, दृश्यन के संख्या, दृश्यन के क्रम निर्धारन, दृश्य के आदि आ अंत वगैरह के ज्ञान रहल जरूरी होला। पटकथा लिखे के पहिले घटना के अनिश्चित वर्तमान काल में घटे के कल्पना करत ओकरा के कागज पर शब्द के रूप देवे के चाहीं। एह बात

के ध्यान जरूर राखे के चाहीं कि दृश्य में अइसन कवन घटना लिहल जाय जवना से पात्रन का चरित्र के जानकारी मिल सके। लेखक के इहो जाने के चाही कि पात्र सब कवना मनः स्थिति आ परिस्थिति के वशीभूत होके काम कर रहल बाड़े आ का पावे के चाहत बाड़े।

पटकथा तीन अंकीय सूत्र पर आधारित होला। पहिलका अंक कथा -कथानक के गर्भ होला। एकरा में अइसन बात परोसे के चाही जवना से आगे चलके चरित्र-चित्रन नाटकीय मोड़ ले पावे। पात्रन के स्थिति-परिस्थिति आ इच्छा एही अंक में उजागर होला। आगे आवेवाली घटनन के नेवतल जाला। एकरा के संटप भी कहल जाला। दूसरका अंक में पात्रन के विशेष परिस्थिति में अलग-अलग इच्छा कामना के चलते भइल संघर्ष दिखावल जाला। कथानक के संवादन के जरिये उलझावल जाला ताकि ऊ चरमोत्कर्ष के ओर सहजे बढ़ सके। पात्रन के घात-प्रतिघात के वर्णन एह तरह से दिखावल जाला कि उन्हन के संकट के एहसास हो जाय। कहानी के विकास एही भाग में होला। एही से पटकथा के दुसरका भाग सबसे बड़ भाग कहाला। एकरा में एक घटना से दोसर घटना आ एक दृश्य से दोसर दृश्य पैदा होला। कथानक के कवनो अइसन दृश्य ना होखे जवन कथा के आगे बढ़े से रोके। पटकथा के तिसरका अंक संकट के समाधान के होला, आभास के होला। एह अंक में कथा खतम हो जाला। ई अंक लम्बा ना होके पहिलके अंक जइसन छोट होला। एक घंटा के फिल्म खातिर पटकथा के लगभग 100-120 पन्ना टंकित होखे के चाहीं। पहिला आ तिसरका अंक खातिर होखे के चाही 36-30 पन्ना। बाकिर पन्ना दोसरा अंक खातिर होखे चाहीं। तीनों अंकन का क्रम के ध्यान जरूर रखें के

चाहीं। पटकथा लिखे से पहिले कथानक विन्दु तय कर लेला से कथा निर्माण के दिशा मिल जाला। दर्शक के मन में जिज्ञासा ठीक से उठावत कथानक में नाटकीय तत्वन क होसला बढ़ावे के चाही। सेटप में इ बतावल जरूरी बा कि पात्र कहा बा? के बा? का करता? आ का चाहऽता?

फिल्म आ टेलीविजन के पटकथा लेखन में फरक होला। साहित्य से जुड़ल आदमी टेलीविजन लेखन में सक्षम होले जबकि फिल्म के संबंध में अइसन नइखे। फिल्म के पटकथा पूरा-पूरा व्यवसाय के ध्यान में राख के लिखाला जबकि टेलीविजन के पटकथा के संबंध में व्यवसाय के संगे-संगे विचार प्रधान होला। टेलीविजन में समय के आभाव होला। एकरा में नाटकीय संवाद के जरूरत होला। दृश्य के सिनेरियो में 3 स्थिति पैदा करे के होला जवना से संवाद में रोचकता बढ़े। जबकि फिल्मन में अइसन ना होखे। फिल्म लेखक का बृहद चिंतन के जरूरत होला। पटकथा एगो हुनर ह। आज फिल्म आ दूरदर्शन के प्रसार-विस्तार आउर पटकथा के लेखन में रोजगार के बढ़त सम्भावना के देखत आज के पीढ़ी पटकथा लेखन में रूचि ले रहल बा। भोजपुरियों में पटकथा लेखन के संभावना धीरे-धीरे बढ़ल जा रहल बा।

बोध प्रश्न

1. पटकथा का ह।
2. पटकथा लेखन का बाड़े में बताईं।
3. टेलीविजन आ फिल्म पटकथा लेखन में का अंतर बा।